आई.एस.एस.एन. संख्या : 2454–2458
नवरचना NAVRACHNA
www.grefiglobal.org/journals/navrachna.2018
वर्ष 4, अंक 1–2, जून–दिसम्बर 2018, पृ. 43–47

आधुनिक जनसंचार माध्यमों का विद्यालयीन शिक्षा पर प्रभाव

रेणू वर्मा'

सारांश

आधुनिक शिक्षा जनसंचार माध्यमों के साथ अत्यधिक सार्थक और समर्थ रूप से प्रस्तुत होती है। आधुनिक शिक्षा के विकसित स्वरूप में जनसंचार एक उपयोगी माध्यम है यदि शिक्षा व्यक्तित्व के विकास की धुरी है तो जनसंचार व्यक्तित्व विकास का आवरण है और बिना आवरण किसी भी तरह के विकास को परिभाषित करना कठिन है। जनसंचार व्यक्तित्व विकास की सटीक पहचान और दिशा देने का कार्य करता है। वर्तमान में जनसंचार माध्यमों को अपनाकर शिक्षा का आधुनिक स्वरूप विकसित हुआ है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र में भोपाल के शासकीय विद्यालय की छात्राओं को प्रभावित करने वाले जनसंचार के विभिन्न माध्यमों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

संचार से तात्पर्य उन समस्त साधनों से है जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति अपनी विचारधारा को दूसरे व्यक्ति के समक्ष अपने वक्तव्य के माध्यम से प्रस्तुत करता और दूसरे की बात को समझने के लिए के लिए अपनाता हैं। वास्तव में यह दो व्यक्तियों के बीच एक सेतु का कार्य करता हैं जिसके अन्तर्गत कहने, सुनने एंव समझने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है (जानसन 2014) हेन्डल व अन्य (2007) के अनुसार– ''संचार केवल सरल भाषा एवं वक्तव्य नहीं अपितु यह अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर दिये जाने वाला एक संदेश हैं जिसमें वे सभी प्रक्रियाएं सम्मिलित होती हैं जिसमें एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को प्रभावित करता है।'' आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में जनसंचार एक व्यापक संचार प्रक्रिया हैं जिसके द्वारा विकसित संचार माध्यमों एवं उपकरणों के द्वारा शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों तक संदेशों, सूचनाओं एवं विचारों को पहुँचाया जाता है। आधुनिक सूचना के इस क्रान्ति के वातावरण ने शिक्षा और जनसंचार के क्षेत्र को और भी अधिक व्यापक बना दिया हैं शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान में पुस्तकों, प्रेस, सिनेमा, रेडियो, टेंलीविजन विडियो, इन्टरनेट, मोबाइल आदि के द्वारा क्रान्ति का सोपान हुआ हैं आज प्रत्येक क्षेत्र में समाचार पत्र, म्यूजिक सिस्टम, फिल्मों, टेंलीविजन, मोबाइल की पहुँच बढ़ी हैं जनसंचार के विभिन्न माध्यमों द्वारा एक समान संदेश, लगभग एक ही समय में बहुत से व्यक्तियों के बीच पहुँचाया जा सकता हैं।

'द न्यू इन्साइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिया' के अनुंसार शिक्षा सें सम्प्रेषण प्रत्येक व्यक्ति के मध्य अर्थ का विनिमय हैं जिसे प्रतीकों की समान व्यवस्था के द्वारा पूर्ण करते है तथा शिक्षा में

शोधार्थी, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल – 462026

जनसंचार का तात्पर्य ''व्यक्ति अथवा एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक संवाद एवं सूचनाओं का स्थानांतरण हैं।'' यदि आधुनिक शिक्षा की बात करें तो संचार माध्यम एक सरल एवं व्यक्तित्व परक ही नहीं अपितु यह अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर संचालित किया जाने वाला सटीक माध्यम हैं, इसमें वे सभी प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं जिसमें एक व्यक्ति अन्य किसी भी व्यक्ति या व्यक्तियों को प्रभावित करता है। संचार की प्रक्रिया में व्यक्ति अपने विचार दूसरों तक पहुँचाता हैं, माध्यम कुछ भी हो सकता हैं, किन्तु जनसंचार में एक वृहत्तर क्षेत्र समाहित हैं इसमें प्रत्येक प्रकार की सूचना, संवाद एवं संचार हैं। सूचनाओं का आदान–प्रदान न सिर्फ दो व्यक्तियों के बीच होता है बल्कि व्यक्तियों और संगठनों के मध्य भी होता हैं जिसके परिणाम स्वरूप आपसी समझ को निर्मित करना सहज हो जाता है। आधुनिक जनसंचार माध्यम आज के युवा वर्ग की दैनिक आवश्यकता बन गये हैं। विद्यालयीन शिक्षा काफी हद तक 'अवाचिक संचार' से जुड़ी होती हैं जो कि संकेतों, चिन्हों, प्रतीकों, प्रतिमाओं और अंग संचालन के माध्यम से होता हैं जिसमें की भाषा का प्रयोग अगर न भी किया जाये तो भी शिक्षण प्रक्रिया पूर्ण होती हैं क्योंकि ये अपने आप में वृहत अर्थ को समाहित किये रहते हैं। 'वहीं दूसरी ओर 'वाचिक संचार' मानव जीवन के विभिन्न आयामों को परिवर्तित करता है। भाषा संचार के उपकरण के रुप में पूर्ण है और इस उपकरण द्वारा लिखित या फिर मौखिक रूप से छात्रों में शारीरिक एंव बौद्विक विकास संभव हैं और अब यह प्रकिया प्रिन्ट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मेल, वाइस मैसेज, फिल्मों, विज्ञापनों द्वारा टेलीविजन एवं मोबाइल माध्यमों द्वारा संचालित/प्रसारित की जाती हैं। साथ ही यह जनसंचार प्रक्रियाएं जितनी प्राचीन हैं उतनी ही नवीन भी हैं। अवाचिक एंव वाचिक संचार प्रक्रियाओ में मशीनी तकनीक के सहयोग से कोई भी व्यक्ति अपने विचार, संदेशों, एवं सूचनाओं को एक ही समय में न सिर्फ छात्राओं को बल्कि हजारों, लाखों व्यक्तियों तक अलग–अलग स्थानों पर संम्प्रेषित कर सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में जनसंचार माध्यमों की उपयोगिता बढ़ने से इसका एक अलग स्वरूप ही सामने आया हैं क्योंकि जागरूकता ही समाज कें विकास में प्रकार्यात्मक योगदान दे सकती है। शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक जनसंचार माध्यमों में मुद्रण माध्यम, इलेक्ट्रानिक माध्यम, पत्र पत्रिकाएं, पुस्तकें, पोस्टर, पेम्पलेट, इंटरनेट, टेलीविजन, मोबाइल, कम्प्युटर, उपग्रह आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भोपाल नगर के शासकीय विद्यालयों की छात्राओं द्वारा जनसंचार माध्यमों का उपयोग, उनको विद्यालय शिक्षा के लिए उपयोगी जनसंचार माध्यमों की जानकारी का आकलंन करना, शिक्षा के क्षेत्र में जनसंचार के प्रभावी माध्यमों का पता लगाना, व जनसंचार माध्यमों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में छात्राओं के व्यवहार में आयें शैक्षाणिक परिवर्तन का अध्ययन करना है। इसके लिये शासकीय विद्यालयों की उन छात्राओं को उत्तरदाता के रूप में चयन किया गया जो कि उस समय हाईस्कूल में नामांकित रही हो। छात्राओं की आयु 14 वर्ष से अधिक एवं 25 वर्ष से कम हो। सभी छात्राओं द्वारा जनसंचार के किन्हीं पाँच माध्यमों का प्रयोग अवश्य करती है जिनमें फोन टेलीविजन, कम्प्यूटर, रेडियों और समाचार पत्र सम्मिलित है। शोध में कुल 60 छात्राओं की उत्तरदाता के रूप में भागीदारी सुनिश्चित की गयी। शोध में चयनित सभी उत्तरदाता भोपाल नगर स्थित शासकीय विद्यालय की छात्राएँ है और सभी उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक पृष्ठभूमि में भिन्नता होने के बावजूद समानता ये सभी निम्नवर्ग से हैं। यह अध्ययन भोपाल नगर के 6 शासकीय विद्यालयों की हाईस्कूल की 60 छात्राओं पर साक्षात्कर अनुसूची पर आधारित उद्‌देश्यपूर्ण निदर्शन विधि का प्रयोग करते हुए किया गया है।

शिक्षा के क्षेत्र में जनसंचार माध्यमों का उपयोग

जनसंचार माध्यमों में ज्यादातर छात्राएं मुख्य रूप से मोबाईल फोन का प्रयोग करती है। कुल 60 उत्तरदातरओं में से लगभग 81.66 प्रतिशत उत्तरदाओं ने बताया कि वह मोबाईल का प्रयोग कई स्वरूप में करते है। इंटरनेट का प्रयोग करने वाले 80.00 प्रतिशत उत्तरदाता है इनमें से रेडियों का प्रयोग करने वाले 65 प्रतिशत है और कम्प्यूटर का प्रयोग करने वाले 55 प्रतिशत उत्तरदाता है। इसके साथ ही कुछ उत्तरदाता अपने परम्परागत संचार माध्यमों को अभी भी अपना कर रखे हुए है। 80 प्रतिशत छात्राएं अभी भी अखबार को मुख्य जनसंचार माध्यम मानती हैं। वर्तमान में टेलीविजन भी संचार का सशक्त माध्यम है व 65 प्रतिशत छात्राएं इसका प्रयोग करती हैं।

उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या शिक्षा के क्षेत्र में जनसंचार का बेहतर उपयोग हो सकता है? सर्वाधिक 17 (28.33 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने बताया कि मनोरंजन में तो जनसंचार प्रथम नम्बर पर है जबकि अन्य उत्तरदाओं ने शिक्षा एवं सूचना के क्षेत्र में भी इसे सहायक बताया। कुल 11 (18.33 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने जनसंचार माध्यम को सूचनाओं के आदान–प्रदान में महत्वपूर्ण माना है। सूचनाओं के आदान–प्रदान के माध्यमो में मोबाईल फोन, बेसिक फोन, इंटरनेट, कम्प्यूटर, टेलिविजन एवं रेडियों तथा समाचार पत्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम है। आज की परिस्थितियाँ पूर्व की तुलना में आधुनिकता की ओर तीव्रता से अग्रसर हो रही है। शैक्षणिक क्षेत्र मे निरंतर नए–नए प्रयोग हो रहे हैं इनमें विविधता के साथ–साथ आधुनकिता लाने का प्रयास भी किया जा रहा है। शासकीय प्रयासों में भी जनसंचार के माध्यमों पर अधिक बल दिया जा रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र मे आधुनिक जनसंचार का प्रभाव

आधुनिक शिक्षा युवाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करती आयी है और यह बहुत ही सामान्य सी बात है कि भारतीय समाज के इसी आधुनिक सामाजिक चक्र में अंग्रेजी भाषा सभ्यता का आवरण बनती जा रही है। आज अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी रहन–सहन और आधुनिक तकनीक उपकरण सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक बन कर रह गये हैं। इसी तारतम्य में 17 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि कम्प्यूटर माध्यम, स्मार्ट फोन और टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रम ही शिक्षा पर ज्यादा असर डालते है। जबकि 8 प्रतिशत छात्राएं अंग्रेजी और कम्प्यूटर से शिक्षा प्राप्त करने को ही सबसे ज्यादा असरदार माध्यम मानते है। साथ ही 9 प्रतिशत वो बालिकाएं है जो अंग्रेजी और कम्प्यूटर कर कार्य मोबाईल/या स्मार्ट फोन के माध्यम से कर लेती है। वही 5 प्रतिशत वे छात्राएँ है जो अंग्रेजी को ही शिक्षा में जनसंचार का सशक्त माध्यम मानती है।

आज के शैक्षणिक एवं व्यवहारिक क्षेत्र में जनसंचार माध्यमों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। शासकीय विद्यालयीन छात्राओं द्वारा मुख्यतः अखबार पत्रिकाएं, टेलीफोन, मोबाईल एवं कम्प्यूटर प्रमुख रूप से आते है। संचार माध्यम मनुष्य के स्वाभाविक जिज्ञासु प्रवृत्ति को और अधिक जिज्ञासु बना देता है, छात्र इसे साकार रूप देने के लिए इन सभी संचार माध्यमों का सहारा लेता है।

शिक्षा के क्षेत्र में जनसंचार माध्यमों के प्रयोग से छात्राओं के व्यवहार में परिवर्तन

जब सभी 60 उत्तरदाताओं से जब यह पूछा गया कि जनसंचार माध्यमों के प्रयोग से छात्राओं के व्यवहार में क्या परिवर्तन हुआ? तो इस पर सभी ने भिन्न–भिन्न प्रकार के उत्तर दिए। सर्वाधिक 30 प्रतिशत छात्राओं ने बताया कि जनसंचार माध्यम से शिक्षा अत्यन्त प्रभावी, विश्वस्त एवं व्यवहारिक

हो जाती है जिससे कि यह अत्यधिक सहज एवं सरल हो जाती है। जबकि 23.33 प्रतिशत छात्राओं ने यह नहीं माना की जनसंचार माध्यम छात्राओं के व्यवहार में परिवर्तन लाने में सफल रहा है। परन्तु वह फिर भी टेलीविजन और संचार के अन्य तकनीकी माध्यमों का प्रयोग करते है। बहुत सी ऐसी छात्राएं है जो संचार के माध्यमों से अवगत तो हैं, किन्तु संचार माध्यमों की सुविधाओं से अछूती है। शासकीय विद्यालयों में भी इसकी उपलब्धता सीमित है।

शिक्षा के क्षेत्र में अपनाये जाने वाले प्रभावी जनसंचार माध्यम

शिक्षा के क्षेत्र में नित नये प्रयोग किये जाते रहे हैं और जैसे ही ये प्रयोग होते हैं, बाजारीकरण की वजह से इसकी उपलब्धता प्रदर्शित हो ही जाती है। वर्तमान में अधिकतर उत्तरदाताओं ने यह माना की जनसंचार माध्यमों में सबसे सशक्त माध्यम फिल्में (33 प्रतिशत) है, क्योंकि फिल्मों में भी समाज ही प्रतिबिम्बित होता है। इसके पश्चात सबसे सशक्त माध्यम स्मार्टफोन (30 प्रतिशत) है, क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति न केवल बात कर सकता है अपितु यह कम्प्यूटर और टेलीविजन का भी काम करता है। मनोरंजन के सारे साधन इस छोटे से फोन में ही उपलब्ध हो जाते हैं। जबकि अखबार, जर्नलस/पत्रिकाएं/पैम्फ्लेटस (11.66 प्रतिशत) अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

जनसंचार के मुख्य रूप से ऐसे माध्यम हैं जो आधुनिक शिक्षा में अपनी अहम भूमिका निभा रहे है। इनमें से फिल्मों को 96.66 प्रतिशत छात्राओं ने सही माना है, वहीं 95 प्रतिशत छात्राएं आज भी रेडियों को संचार का सशक्त माध्यम मानती हैं जिसमें प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में क्षेत्रीय समाचार, प्रादेशिक कार्यक्रम, कृषि सम्बन्धी समस्याओं के समाधान आदि मुख्य रूप से शामिल हैं। और जहां तक अखबार का प्रश्न है, आज भी 91.66 प्रतिशत लोग जीवन की कठिनाईयों का हल अखबार में ढूंढते हैं, जैसे विज्ञापन, नवीन जानकारियां, योजनाएं चाहे इनका संचालन/कियान्वयन हो या फिर नयी योजनाओं से सम्बधित जानकारीयाँ जो कि आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। शिक्षा सदैव से ही व्यक्तित्व के विकास में सहायक रही है और यदि शिक्षा और जनसंचार माध्यम दोनों ही किसी व्यक्ति को विकसित करने में लग जाए तो इसके और भी अधिक सकारात्मक पहलू दिखाई देते है। जब सभी उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि क्या जनसंचार माध्यमों द्वारा आधुनिक शिक्षा को और सकारात्मक एवं प्रभावी बना सकते है तो 46.60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के उत्तर उत्साह जनक और सकारात्मक रहे। सिर्फ 10 प्रतिशत छात्राओं के उत्तर 'बिल्कुल नहीं' में थे, इससे यह सिद्ध होता है कि संचार माध्यमों को शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से जोड़कर अत्यन्त प्रभावी बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष

शिक्षा के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से छात्र सदैव जनसंचार माध्यमों का उपयोग करते ही है। जिससे छात्राओं को संचार के माध्यमों और उपकरणों से स्वयं को शिक्षा की वास्तविकता और व्यवहारिकता का ज्ञान आसान से प्राप्त हो जाता है। वास्तव में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, शिक्षा के क्षेत्र में संचार को यदि पृथक कर दिया जाए तो शिक्षा में एक कमी का अहसास होता है और आधुनिक शिक्षा जो वर्तमान में विश्व को 'संचार समाज' की संज्ञा देती है अधूरी रह जायेगी। आधुनिक जनसंचार माध्यम शिक्षा और समाज को आधुनिक तकनीकों के माध्यम से युवाओं को न सिर्फ राष्ट्र विकास की ओर अग्रसर करता है, बल्कि इसके कारण युवावर्ग की पारम्परिक शिक्षा पद्वति में बदलाव आया है जैसे

शासकीय विद्यालयों में टेलीविजन और फिल्मो के प्रसारण, विज्ञान एवं प्रौघोगिकी प्रदर्शनी, कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के माध्यम से शिक्षा में उपयोगिता लाना है। आज का युवा कई आधुनिक तकनीकी माध्यमों से गिरफ्त में है चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो या मनोरंजन के क्षेत्र में या फिर सूचना का क्षेत्र हो जनसंचार सभी क्षेत्रों में शिक्षा के साथ–साथ अपना महत्व सिद्ध कर चुका है। लगभग आधी छात्राओं का मानना है कि इंटरनेट और कम्प्यूटर के माध्यम से आधुनिक शिक्षा प्रणाली को और अधिक बेहतर बनाया जा सकता है साथ ही शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में इसके बदलावों की अपनाया भी जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Johnsons, Allan G. 2014: *The Gender Knot: Understanding Our Patriarchal Legacy*, Temple University Press, Philadelphia.

Handel, Gerald, Spencer Cahill, and Frederick Elkin. 2007. *Children and society: The Sociology of Children and Childhood, London:* Oxford University Press.